"हिन्दी में किन्नर विमर्श का सामाजिक स्वीकरण : एक अनुशीलन"

(विशेषकर कथा साहित्य के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय हिन्दी – विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी.एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध - प्रारूप

संकाय – मानविकी

विषय – हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ. आलोक कुमार राय

हिन्दी – विभाग

सी.एम. कॉलेज, दरभंगा

ललित नारायण मिथिला, विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

आशु प्रज्ञा

पैट क्रमांक – □2209046

गोपेश्वर कॉलेज कैंपस, हथुआ

पो०+थाना- हथुआ, जिला- गोपालगंज

पिन- 841436

1. **शोध का विषय :**

हिन्दी में किन्नर विमर्श का सामाजिक स्वीकरण : एक अनुशीलन (विशेषकर कथा साहित्य के संदर्भ में)

भूमिका :

किन्नर विमर्श अपेक्षाकृत नया विमर्श है। समाज में आनेवाले बदलाव का प्रभाव का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों के गंभीर अध्ययन पर पड़ना स्वाभाविक है। आज के समय में निकृष्ट समझे जाने वाले विषयों को भी केन्द्रीय महत्व का माना जा रहा है। किन्नरों का जीवन संदर्भ प्रायः उपेक्षा का शिकार रहा। नयी चिंतनधारा के आगमन के कारण साहित्यिक रचनाकारों ने इस विषय की ओर ध्यान देना शुरु किया और हिन्दी की साहित्यिक रचना को नया आयाम दिया। इस संदर्भ में 'यमद्वीप (नीरजा माधव), 'मैं भी औरत हूँ' (डा० अनसूया त्यागी), 'किन्नर कथा' (महेन्द्र भीष्म), 'तीसरी ताली' (प्रदीप सौरभ), 'गुलाममंडी' (निर्मला भुराडिया), 'पोस्ट बॉक्स न० 203 नाला सोपारा' (चित्रा मुद्गल), 'मैं पायल' (महेन्द्र भीष्म), 'जिंदगी 50 50 (भगवंत अनमोल) जैसे उपन्यासों का उल्लेख किया जा सकता है। इसी प्रकार किन्नर जीवन से संबंधित हिन्दी कहानियों के संग्रह 'थर्ड जेंडर : हिन्दी कहानियाँ' (सं० डा० एम० फिरोज खान) ने प्रबुद्धजनों का ध्यान आकृष्ट किया है। ऐसी स्थिति में उक्त विषय की ओर शोधकर्ताओं का ध्यान जाना स्वाभाविक है। मैंने विषय की नवीनता और महत्ता को देखते हुए किन्नरों की सामाजिक स्वीकृति की समस्या को अपना विषय बनाया है। इसके साथ ही

हिन्दी से जुड़ी इससे संबंधित कथात्मक रचनाओं को अपनी गवेषणा के आधार के रूप में स्वीकार करने का निश्चय किया है।

प्रस्तावित शोध से जुड़े चार बीज शब्द हैं – हिन्दी अर्थात् हिन्दी साहित्य, किन्नर अर्थात् न पूर्णतः स्त्री और न पूर्णतः पुरुष, विमर्श अर्थात् वैकल्पिक चिंतन, नवीन दृष्टिकोण के अनुसार चिंतन करना और किसी भी चिंतन को अंतिम नहीं मानने की अवधारणा में विश्वास करना; इसकी प्रकृति मूलतः अन्तर्विरोधी तत्त्वों से निर्मित होती है। यही कारण है कि विमर्श निरंतर चलने वाली गतिशील परिणामवाली प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। सामाजिक स्वीकरण जैसे पदों का एक साथ रखने पर या इन्हें एक साथ गिनने पर चौथे बीज शब्द की रचना होती है। यहाँ सामाजिक स्वीकरण के स्तर पर दो अर्थ उत्पादित करते हैं। एक साहित्य के संदर्भ में दूसरे समाज के संदर्भ में, हिन्दी साहित्य के संदर्भ में सामाजिक स्वीकरण का अर्थ है हिन्दी भाषा से जुड़े साहित्यिक चेतना से निर्मित साहित्यिक स्वीकृति। इस प्रकार की साहित्यिक स्वीकृति बाद में सामाजिक स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त करता है।

साहित्यकारों का भी अपना स्वायत्त समाज होता है जो साहित्यकारों की मानसिकता पर पड़ने वाले विवेक और संवेदना से निर्मित होता है। यह साहित्यकारों का आन्तरिक पर्यावरण होता है जिसका गहरा प्रभाव उनकी भाषिक एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति पर पड़ता है। किन्नर विमर्श को हिन्दी भाषा से जुड़े साहित्य में ऐसी ही सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो गई है। यह विषय बन गया है। भाषा एवं साहित्य में विमर्श का विषय बन जाने के बाद इसके समाज द्वारा सामाजिक स्तर पर स्वीकृति मिलना अभी बाकी है। हिन्दी साहित्य में भी अभी इस विमर्श के चरमोत्कर्ष तक पहुँचने का दायित्व, दायित्व ही बना हुआ है। इसे

अंतिम परिणति तक पहुँचाना अभी शेष है जिसके परिणामस्वरूप किन्नरों को समाज द्वारा स्वीकृति मिल सके।

प्रस्तावित शोध का प्रमुख लक्ष्य यह है कि किन्नर विमर्श से संबंधित हिन्दी की साहित्यिक कथा कृतियों के विमर्शों का शोधपरक अध्ययन प्रस्तुत किया जाए ताकि किन्नरों के समाज द्वारा स्वीकृति की प्रक्रिया को और अधिक गतिशीलता प्राप्त हो सके।

2. प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई कि उक्त विषय पर जितना शोध किया जाना चाहिए उतना नहीं किया गया है। यह विषय मानवीयता एवं मनुष्य के मनुष्य के जीवन की सार्थकता एवं औचित्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस विषय पर सीमित रचनाओं के बावजूद गुणवत्ता एवं मौलिकता का अभाव नहीं है। किन्नर साहित्य में किन्नरों की समस्याओं को सहानुभूति एवं स्वानुभूति के रूप में चित्रित किया गया है। शोध की पहली शर्त यह होती है, अज्ञात या अल्पाात विषय पर कार्य कर उसे समाज के व्यापक हित में उजागर करे, इस दृष्टि से किन्नर साहित्य को गवेषणा का विषय बनाना आवश्यक प्रतीत हुआ क्योंकि उक्त विषय अल्पज्ञात एवं उपेक्षा का शिकार रहा है। बिना शोध कार्य किये इस विषय का साहित्यिक एवं सामाजिक मूल्यांकन संभव नहीं हो सकता है।

3. प्रस्तावित शोध विषय का महत्व :

प्रस्तावित शोध विषय इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि किन्नर समुदाय न केवल सामाजिक उपेक्षा का शिकार रहा है बल्कि साहित्यिक उपेक्षा का भी शिकार रहा है। ऐसी स्थिति में इस समुदाय से संबंधित साहित्य का गहन गवेषणा करना विषय को उजागर करने के साथ ही उसकी समाजिक स्वीकृति को भी प्रोत्साहित कर सकता है। ऐसी प्रेरक गतिविधि के बिना सामाजिक जड़ता को समाप्त करना संभव नहीं होगा। साहित्य की गतिशीलता समाज को गतिशीलता प्रदान कर सकती है। अतः उक्त विषय को महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। इस अध्ययन से किन्नर समाज की समस्याओं को समझने और उनके समाधान ढूँढ़ने में मदद मिल सकती है।

4. पूर्वकृत शोध :

किन्नरों के जीवन को विषय बनाकर लिखे ग्रंथो पर निम्नलिखित कार्य हुए हैं –

(क) हिन्दी कथा साहित्य में वर्णित किन्नर समाज – मोहनलाल सुखाड़िया विश्वद्यिालय, राजस्थान।

(ख) किन्नर विमर्श पर आधारित हिन्दी उपन्यासों में व्याख्यायित सामाजिक समस्याएँ, एस० एन० डी० टी० वीमेंस विश्वविद्यालय महाराष्ट्र।

(ग) समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति एवं भूमिका एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के विशेष संदर्भ में – हेमवती नन्दन बहुगुणा गड़वाल विश्वविद्याालय, उत्तराखण्ड।

(घ) इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श – केन्द्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु।

5. शोध के आधार ग्रंथ :

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए उपजीव्य ग्रंथों की सूची निम्नलिखित है।

(क) उपन्यास :

(प) यमदीप 2002 ई० नीरजा माधव

(पप) मैं भी औरत हूँ 2005 ई० डॉ० अनसूया त्यागी

(पपप) किन्नर कथा 2010 ई० महेन्द्र भीष्म

(पअ) तीसरी ताली 2010 ई० प्रदीप सौरभ

(अ) गुलाम मण्डी 2013 ई० निर्मला भुराड़िया

(अप) पोस्ट बॉक्स नं० – 203 नाला सोपारा 2006 चित्रा मुद्गल

(अपप) मैं पायल 2016 ई० महेन्द्र भीष्म

(अपपप) जिन्दगी 50 50 2017 ई० भगवन्त अनमोल

(ख) कहानी संग्रह :

थर्ड जेन्डर हिन्दी कहानियाँ – सं० डॉ० एम० फिरोज खान

(ग) लघुकथाएँ :

मेरी किन्नर केन्द्रिय लघुकथाएँ (संग्रह) पारस दासोत

(घ) आत्मकथा :

मैं हिजड़ा, मैं लक्ष्मी 2015 लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी

पुरु तन में फँसा मेरा नारी मन 2013 मानोबी बंधोपाध्याय

(च) कविता :

अधूरी देह 2020 गीतिका 'वेदिका'

6. शोध की परिकल्पना :

हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श को स्वीकार करते हुए, यमदीप, किन्नर कथा, तीसरी ताली, मैं भी औरत हूँ, गुलाम मंडी, पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा, में पायल जैसे सशक्त उपन्यासो की रचना की जा चुकी है। इसी प्रकार बिन्दा महाराज, खलीक अहमद बुआ, बीच के लोग, ई मुरदन का गाँव, संझा, इज्जत के रहवर, कौरतार से बीनी वदहिया, त्रासदी नेग, पन्ना बा, हिजड़ा, संकल्प जैसी कहानियाँ भी उपलब्ध होती हैं, जिसमें किन्नर जीवन को विषय बनाकर विमर्श किया गया है। उक्त कथा साहित्य को देखते हुए कहा जा सकता है, कि हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत किन्नर विमर्श का शुभारंभ हो चुका है लेकिन इस विमर्श को अंतिम परिणति तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य अभी अधूरा है। साहित्यिक स्वीकृति के द्वारा सामाजिक स्वीकृति के लिए मार्ग प्रशस्त करना अभी बाकी है।

हिन्दी के कथा साहित्य में नीरजा माधव के 'यमदीप' को ऐतिहासिक ही नहीं, रचनात्मक महत्व भी प्राप्त है। इससे किन्नर विमर्श का आरम्भ होता है। आरंभिक कृति होने के बाजूद इसमें किन्नर जीवन में मौलिक समस्याओं – बेरोजगारी, समाज में उसके स्थान, उपेखित जीवन, रोटी, कपड़ा, मकान जैसी समस्याएँ, प्राकृतिक न्याय के अभाव के साथ ही सामाजिक न्याय जैसे विषयों को उठाया गया है। यहाँ देह व्यापार और एड्स जैसी समस्याओं को भी प्रमुखता

से उठाया गया है। किन्नर जीवन के अनछुए पहलुओं को उठाने के लिए भी इसे ऊँचा स्थान प्राप्त है। किन्नर विमर्श के प्रसंग में सरकार और समाज के दायित्व के सवाल को उभारना साहित्य के सामाजिक सरोकार को रेखांकित करता है। यहाँ मानवाधिकार और अन्य नागरिकों को दी जाने वाली सुविधाओं की बात की गयी है।

हाशिए को मुख्यधारा में शामिल किये जाने की बात करते हुए किन्नरों के अस्मिता बोध को जगाने का प्रयास किया गया है। यहाँ किन्नरों के विस्थापित जीवन की दुर्दशा को स्पष्ट किया गया है। इससे जड़ता को तोड़ने वाली प्रतिरोधक शक्ति को सक्रियता मिलेगी। किन्नर जीवन के बाह्य एवं आन्तरिक पक्षों को उद्घाटित करने की दृष्टि से उनके जीवन से जुड़े उपन्यास साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। संख्या में कम होने के बावजूद उनकी भूमिका वड़ी और सार्थक मानी जा सकती है।

किन्नर उपन्यासकार ने किन्नरों के जीवन में व्याप्त अवांछित तत्वों, में लैंगिकता, लौड़ेबाजी जैसे विषयों को साहस के साथ सामने लाया है।

किन्नर उपन्यासकारों ने किन्नरों के अवांछित जीवन के कटु यथार्थ का चित्रण अवश्य किया है, लेकिन निर्मम तटस्थता और सहानुभूति के साथ ऐसे उपन्यासों में नागरिक जीवन के अंतर्विरोधों में नागरिक जीवन के अंतर्विरोधों और विडंबनाओं को भी रेखांकित किया गया है। साथ ही यहाँ किन्नरों की मानवीयता को भी दर्शाया गया है।

वैज्ञानिक उपलब्धियों के माध्यम से किन्नरों के प्राकृतिक दोषों को दूर किया जा सकता है। उन्हें पूर्णता प्रदान कर सामान्य स्त्री पुरुष में परिवर्तित

किया जा सकता है – यह आशावादी दृष्टि भी देखने को मिलती है। किन्नर जीवन से जुड़े उपन्यासों में उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक यथार्थ का चित्रण भी देखने को मिलता है। बलात्कार जैसी समस्या को सभ्य समाज की गंभीर समस्या के रूप में चित्रित किया गया है इसके साथ ही नये नये प्रश्न भी उठाये गये है।

किन्नर समस्या को नारी के आमने सामने रखकर भी परखने की कोशिश की गयी है। 'गुलाम मंडी' में इसे देखा जा सकता है। किन्नर जीवन से जुड़ी कहानियों में उनके जीवन की संवेदनाओं को पकड़ने के साथ ही उनके दैनिक जीवन की गतिविधियों का भी चित्रण किया गया है – जिनसे उनके आन्तरिक और बह्म जीवन को समझने में मदद मिलती है।

7. शोध की प्रविधि :

प्रस्तुत शोध के लिए शोधपरक वस्तुनिष्ठ विधि एवं तथ्यानुमोदित आलोचनात्मक विधि का उपयोग किया जाएगा। इसके साथ ही अनुभविक एवं अन्तरानुशासिक विधियों का भी सहारा लिया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर सर्वेक्षण विधि का भी उपयोग किया जाएगा।

8. शोध अध्यायों का विभाजन :

प्रथम अध्याय	हिन्दी में किन्नर विमर्श का आरंभ।
द्वितीय अध्याय	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श का स्वरूप।
तृतीय अध्याय	किन्नर विमर्श की बहुआयामिता।
चतुर्थ अध्याय	किन्नरों के सामाजिक स्वीकरण की समस्या।

पंचम अध्याय हिन्दी में किन्नर विमर्श : दशा एवं दिशा।

षष्ठ अध्याय हिन्दी का किन्नर विमर्श : विश्लेषण एवं मूल्यांकन।

उपसंहार

संदर्भ ग्रन्थ सूची

9. प्रस्तावित शोध ग्रन्थों की सूची :

(1) हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन; सं० डॉ० दिलीप मेहरा, वाणी प्रकाशन, संस्करण – 2019 नयी दिल्ली।

(2) किन्नर गाथा; शीला डागा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2020।

(3) किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता; प्रियंका नारायण, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण – 2021

(4) किन्नर : अबूझा रहस्यमय जीवन; शरद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण – 2019

(5) क्वीर विमर्श; के वनजा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2021

(6) किन्नर समाज सन्दर्भ तीसरा ताली, पार्वती कुमारी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2019

(7) हिन्दी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर, डॉ० विजेन्द्र प्रताप सिंह, अमन

प्रकाशन, कानपुर, संस्करण –2017

(8) थर्ड जेन्डर : अतीत और वर्तमान; सं० डॉ० एम. फिरोज खान, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2023

(9) हिन्दी उपन्यास का विकास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, संस्करण – 2009

(10) भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, सं० विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोण्ड अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2016

(11) थर्ड जेण्डर और साहित्य; सं० डॉ० एम० फिरोज खान, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2018

(12) थर्ड जेण्डर और जिन्दगी 50 50, सं० डॉ एम० फिरोज खान, विकास प्रकाशन, कानपर, संस्करण –2018

(13) किन्नर विमर्श दशा और दिशा, डॉ० विजय कुमार पाठक, भावना प्रकाशन, संस्करण –2019

(14) हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श; डॉ० मधु खराटे, विद्या प्रकाशन, संस्करण – 2018

(15) प्रदीप सौरभ के उपन्यासों में उत्तर समय; उमेश कुमार, बिहान पब्लिकेशन, संस्करण – 2014

(16) हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली; अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन,

नयी दिल्ली, संस्करण –

पत्र पत्रिकाएँ

लमही ऋत्विक राय

अपेक्षा तेज सिंह

आउटलुक गिरिधर झा

शोध निर्देशक
डॉ० आलोक कुमार राय
हिन्दी विभाग
सी० एम० कॉलेज दरभंगा
ललित नारायण मिथिला, विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा

शोधार्थी
आशु प्रज्ञा
पैट क्रमांक – 2209046
गोपेश्वर कॉलेज कैम्पस
हथुआ, गोपालगंज
पिन – 841436